REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

लैंगिक भूमिका के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का अध्ययन ।

सन्दीप अरोरा [1] , सुनीता भार्गव [2]
[1]शोधार्थी, पी0एच0डी0, (शिक्षा शास्त्र) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
[2]शोध निर्देशिका, प्राचार्य – संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर (राजस्थान).

शोध सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस नाते समाज, स्त्री एवं पुरूष हेतु जो व्यवहार, क्रियाकलाप, अभिवृत्ति, भूमिका निर्धारित करता है, वहीं लैंगिक भूमिका कहलाती है। सामाजिक प्राणी होने के कारण ही मानव की मूलभूत एवं अनिवार्य मनोवैज्ञानिक आवश्यकता, आत्म–सम्मान मनोविज्ञान की प्राचीन अवधारणाओं में से एक है। स्वयं के विषय में अपना धनात्मक या ऋणात्मक मूल्यांकन, जो हम महसूस करते है, वहीं आत्म–सम्मान है। लैगिंक भूमिका विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान को कैसे एवं कितना प्रभावित करती है, यह प्रारम्भ से ही शोध का विषय रहा है। लैंगिक भूमिका के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध का उद्देश्य रहा है। प्रस्तुत शोध के न्यादर्श हेतु कक्षा पंचम से कक्षा सप्तम तक अध्ययनरत 9 से 12 वर्ष की आयु के 560 विद्यार्थियों (280 बालक एवं 280 बालिकाओं) का चयन यादृच्छिकी विधि (रैण्डम सैम्पलिंग मैथड) द्वारा किया गया। सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त करते हुए उपर्युक्त न्यादर्श पर बैटल की आत्म–सम्मान परिसूची मापनी का डॉ0 आनन्द कुमार द्वारा विकसित भारतीय संस्करण प्रशासित किया गया। शोध से प्राप्त निष्कर्षो में बालक–बालिका के सामान्य आत्म–सम्मान, सामाजिक आत्म–सम्मान शैक्षिक आत्म–सम्मान, अभिभावकीय आत्म–सम्मान और कुल आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कीवर्डस – लैगिक भूमिका, विद्यार्थी, आत्म–सम्मान

प्रस्तावना –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज स्त्री एवं पुरूष हेतु व्यवहार करने के लिए जो क्रियाकलाप निर्धारित करता है, वहीं लैंगिक भूमिका का रूप लेता है। स्त्री एवं पुरूष के लिए उचित व्यवहार, अभिवृति, क्रियाकलाप क्या होने चाहिए इन सबकी अपेक्षा लैंगिक भूमिका के तहत ही की जाती है। लैंगिक भूमिका सीखा हुआ व्यवहार है, जो उन तरीकों को बताता है जिनके द्वारा प्रत्येक लिंग के सदस्य को व्यवहार करना चाहिए। लैंगिक भूमिका संस्कृत सापेक्ष होती है। लैंगिक भूमिका समाज निर्मित होने के कारण परिवर्तनशील होती है, किन्तु इनको परिवर्तित करना कठिन होता है, क्योंकि इनमें निश्चित प्रकार की सार्वभौमिकता पाई जाती है। वहीं दूसरी तरफ आत्म–सम्मान मानव की मूलभूत और अनिवार्य मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है। आत्म सम्मान बहुत महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक संगठन है। यह आत्म मूल्य की एक भावना है जो समाजीकरण की प्रक्रिया के मध्य विकसित होती है। स्वयं के विषय में अपना धनात्मक या ऋणात्मक मूल्यांकन जो हम महसूस करते है वहीं आत्म–सम्मान है।

समाज प्रदत्त लैगिंक भूमिका विद्यार्थी के आत्म–सम्मान को एक दिशा अवश्य प्रदान करती है। आत्म–सम्मान की भावना समाज प्रदत्त लैंगिक भूमिका से किस प्रकार सम्बन्धित होती है? यह एक विचारणीय

विषय है। लैंगिक भूमिका ही परिवार, पास–पडोस, विद्यालय, समुदाय एवं समाज में विद्यार्थी की पद, प्रस्थिति, कार्य, व्यवहार, पहचान, सोच, मूल्य, अपेक्षाओं को निर्धारित करती है। समाज, संस्कृति, परिवेश, भाषा का माध्यम, शिक्षा का स्तर आदि विद्यार्थी के आत्म–सम्मान को प्रभावित करने वाले कारक है। ये सभी कारक लैंगिंक भूमिका से भी सम्बन्धित है।

अध्ययन की आवश्यकता –

समकालीन समाजों में लैंगिंक भूमिका एवं आत्म–सम्मान ज्वलंत विषय है। वस्तुतः यह एक विचारणीय प्रश्न है कि क्या लैंगिंक भूमिका विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है? लैंगिंक भूमिका पर आधारित पूर्वाग्रस्त व्यवहार, जो विद्यालय में अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के साथ प्रदर्शित किया जाता है, के कारण उनमें निम्न आत्म–सम्मान को उत्पन्न करता है। आत्म–सम्मान के अभाव में विद्यार्थियों में लैंगिंक असंवेदनशीलता हीन भावना एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ जन्म लेती है। आधुनिक भारतीय समाज में बालिकाओं ने बालकों की अपेक्षा उत्तम शैक्षिक उपलब्धि प्रदर्शित की है किन्तु बालिका शिक्षा का प्रतिशत बालक शिक्षा की अपेक्षा अभी भी कम है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित होने के बाद भी घर पर काम में मदद करने के लिए बालिकाओं को विद्यालय जाने से रोक दिया जाता है। अशिक्षित बालक बालिकाओं का निम्न आत्म–सम्मान उनमें अनेक सामाजिक एवं मानसिक समस्याओं को जन्म देता है। जो बालक या बालिका में स्वयं के प्रति एक नकारात्मक सोच को उत्पन्न करता है और वह अपने को और अपनी क्षमताओं को दूसरे से कमतर आंकता है। आत्म सम्मान का स्तर विद्यार्थी के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। विद्यार्थी की सोच, भावनाएँ, इच्छाएँ, मूल्य, पंसद, नापंसद, लक्ष्य उपलब्धि, अभिप्रेरणा, लैंगिंक भूमिका आदि से आत्म–सम्मान प्रभावित होता है।

एल0जे0 अलपर्ट गिलस, जे0पी0 कोनिल, एम0एल0 श्रवालबे, सी0एल0 स्टेपलस, रेमेंड मोंट मेयर, आर0एल0 हनलोन, पी0फ्रोम, जे0डब्लू0 ब्रनेट, स्टीनसन्, एम0 पोलस एवं ए0 बाल्स आदि शोधकर्ताओं ने विभिन्न चरों को लेकर लैंगिंक भूमिका एवं आत्म–सम्मान के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण शोध कार्य किए। उपर्युक्त शोध अध्ययन मनोरोग, चिकित्सा, मनोविज्ञान एवं समाज विज्ञान के क्षेत्र में किए गए। इसलिए शोधकर्ता के मस्तिष्क में शिक्षा एवं विद्यालीय जीवन के सन्दर्भ में प्रस्तुत अध्ययन करने की आवश्यकता अनुभव हुई।

शोध के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है –

(1) लैंगिक भूमिका का विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(2) बालक–बालिका के सामान्य आत्म–सम्मान, सामाजिक आत्म–सम्मान,शैक्षिक आत्म सम्मान, अभिभावकीय आत्म–सम्मान और कुल आत्म–सम्मान में अन्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ –

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

(1) बालक–बालिका के सामान्य आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(2) बालक–बालिका के सामाजिक आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।

(3) बालक–बालिका के शैक्षिक आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(4) बालक–बालिका के अभिभावकीय आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।

(5) बालक–बालिका के कुल आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

चर – प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित चरों का प्रयोग किया गया –

स्वतंत्र चर – लैंगिंक भूमिका

आश्रित चर – आत्म सम्मान

क्षेत्र एवं न्यादर्श – प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र जनपद मुजफ्फरनगर तक सीमित रखा गया है ।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने यादृच्छिकी न्यादर्श विधि द्वारा कक्षा पंचम से कक्षा सप्तम् तक अध्ययनरत 9 से 12 वर्ष की आयु के 560 विद्यार्थियो (280 बालक एवं 280 बालिकाओं) का चयन किया।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोधकर्ता द्वारा किया गया।

उपकरण – बैटल की बालक आत्म–सम्मान परिसूची मापनी का डॉ0 आनन्द कुमार द्वारा विकसित भारतीय संस्करण प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त किया गया। 50 पदों वाले इस उपकरण में सामान्य आत्म–सम्मान (20 पद), सामाजिक आत्म–सम्मान (10 पद) शैक्षिक आत्म–सम्मान (10 पद), अभिभावकीय आत्म–सम्मान (10 पद) सम्मिलित है। जिनके उत्तर प्रयोज्य को 20 मिनट में हाँ या नहीं में देने होते है।

सांख्यिकी – प्रदत्तों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु SPSS (Version 17) को प्रयुक्त किया गया। क्रान्तिक अनुपात [CR] सांख्यिकी विधि की सहायता से परिणाम प्राप्त किए गए।

सम्प्राप्ति – अध्ययन में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए –

परिकल्पना 1 – बालक – बालिका के सामान्य आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

बालक–बालिकाओं का सामान्य आत्म–सम्मान

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
बालक	280	14.83	2.13	2.50	0.01 स्तर
बालिका	280	15.28	2.18		पर स्वीकृत

0.05 स्तर पर C.R. मान = 1.96 स्वतंत्रता का अंश (df) = 558

0.01 स्तर पर C.R. मान = 2.58

उपर्युक्त तालिका के आधार पर परिकल्पना "बालक–बालिका के सामान्य आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।" 0.01 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2– बालक – बालिका के सामाजिक आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

बालक–बालिकाओं का सामाजिक आत्म–सम्मान

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
बालक	280	6.59	1.42	0.33	दोनों स्तरों
बालिका	280	6.53	1.53		पर स्वीकृत

0.05 स्तर पर C.R. मान = 1.96 स्वतंत्रता का अंश (df) = 558

0.01 स्तर पर C.R. मान = 2.58

उपर्युक्त तालिका के आधार पर परिकल्पना "बालक–बालिका के सामाजिक आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 3 – बालक – बालिका के शैक्षिक आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

बालक–बालिकाओं का शैक्षिक आत्म–सम्मान

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
बालक	280	8.04	1.26	0.18	दोनों स्तरों
बालिका	280	8.06	1.37		पर स्वीकृत

0.05 स्तर पर C.R. मान = 1.96 स्वतंत्रता का अंश (df) = 558

0.01 स्तर पर C.R. मान = 2.58

उपर्युक्त तालिका के आधार पर परिकल्पना "बालक–बालिका के शैक्षिक आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 4 – बालक – बालिका के अभिभावकीय आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

बालक–बालिकाओं का अभिभावकीय आत्म–सम्मान

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
बालक	280	7.75	1.30	1.09	दोनों स्तरों
बालिका	280	7.87	1.32		पर स्वीकृत

0.05 स्तर पर C.R. मान = 1.96 स्वतंत्रता का अंश (df) = 558

0.01 स्तर पर C.R. मान = 2.58

उपर्युक्त तालिका के आधार पर परिकल्पना "बालक–बालिका के अभिभावकीय आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 5 – बालक – बालिका के कुल आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

बालक–बालिकाओं का कुल आत्म–सम्मान

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	स्वीकृत/ अस्वीकृत
बालक	280	37.21	4.26	1.70	दोनों स्तरों
बालिका	280	37.84	4.38		पर स्वीकृत

0.05 स्तर पर C.R. मान = 1.96 स्वतंत्रता का अंश (df) = 558

0.01 स्तर पर C.R. मान = 2.58

उपर्युक्त तालिका के आधार पर परिकल्पना "बालक–बालिका के कुल आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष –

बालक–बालिका के सामान्य आत्म–सम्मान, सामाजिक आत्म–सम्मान, शैक्षिक आत्म–सम्मान, अभिभावकीय आत्म–सम्मान एवं कुल आत्म–सम्मान में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। उच्च प्राथमिक स्कूली बच्चों का सामान्य आत्म–सम्मान मामूली रूप से जैविकीय लिंग से सम्बन्धित पाया गया। **(गिलिस एवं कोनिल 1989)।** पुरूष, महिलाओं की तुलना में सामाजिकता को अधिक महत्व देते है। **(माइकल एवं क्लीफोर्ड 1991)।** बालिकाओं की तुलना में बालकों के आत्म सम्मान का स्तर उच्च होता है। **(सिंह, हसन, एवं वानी 2017)।** पुरूषों का आत्म–सम्मान, महिलाओं की अपेक्षा सार्थक रूप से उच्च पाया गया **(चौरसिया एवं महापात्रों 2016)।** पुरूष छात्रों की तुलना में महिलाएँ छात्राएँ अधिक आत्म–सम्मान रखती है। **(गस्ती एवं शिवचरण 2015)।** आत्म सम्मान के स्तर पर पुरूष एवं महिला महाविद्यालीय विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **(जैन एवं दीक्षित 2014)।** छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च अकादमिक आत्म–सम्मान पाया गया। जबकि लिंग भेद के सन्दर्भ में समग्र आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **(अहमद, इमरान, खानम और रियाज 2013)।**

प्रस्तुत शोध में आत्म–सम्मान के विभिन्न स्तरों पर बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। उपर्युक्त परिणामों का कारण समाज में सकारात्मक परिवर्तन है, जहाँ स्त्री एवं पुरूष दोनों आत्म–सम्मान का समान स्तर रखते है। याहच्छिक विधि से चयनित वृहद न्यादर्श पर किए गए प्रस्तुत अध्ययन में बाह्य चरों एवं कारकों के प्रभावों को न्यूनतम रखने का प्रयास किया गया। जिसके कारण उपर्युक्त परिणाम प्राप्त हुए ।

सन्दर्भ –

- कापर स्मिथ, एस0 (1967) द इंसीडेण्ट ऑफ सेल्फ स्टीम, सैन फ्रांसिस्को, फ्रीमैन।
- ब्रेंडन, एन0 (1999) द साइकलॉजी ऑफ सेल्फ स्टीम, लॉस एंजिल्स, नोरा पब्लिशिंग।
- कपिल, एच0के0 (1975) सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में) आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- सुधा, डी0के0 (2000) जेण्डर रोलस, नई दिल्ली ए0पी0एच0 पब्लिशिंग।
- www.shodhganga.inflibnet.ac.in
- www.psychology.org/linka.

सन्दीप अरोरा
शोधार्थी, पी0एच0डी0, (शिक्षा शास्त्र) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सुनीता भार्गव
शोध निर्देशिका, प्राचार्य – संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर (राजस्थान).